



Be Mains Ready

“वल्लोम क्या है? एक असफल कालदास और कालदास? एक सफल वल्लोम।”- इस कथन के आधार पर ‘आषाढ का एक दिन’ की चरित्र-योजना के वैशष्ट्य को रेखांकित कीजिये।

04 Aug 2019 | रवीजन टेस्ट्स | हिंदी साहित्य

दृष्टिकोण / व्याख्या / उत्तर

मोहन राकेश नवलेखन के दौर के रचनाकार हैं। इस दौर की अधिकांश रचनाएँ अस्तित्ववाद से प्रभावित हैं। दरअसल, उपर्युक्त कथन भी अस्तित्ववादी अवधारणाओं की अभियोजना ही है। अस्तित्ववाद के अनुसार कोई भी व्यक्ति ‘केवल अच्छा’ या ‘केवल बुरा’ नहीं होता बल्कि ‘अच्छा और बुरा’ होता है तथा उसे अच्छा या बुरा बनाते हैं उसके हालात। मोहन राकेश ने ‘आषाढ का एक दिन’ नाटक की चरित्र-योजना में इस अवधारणा को अनुस्यूत किया है। इस कथन के माध्यम से राकेश यह संप्रेषित करना चाहते हैं कि एक दूसरे के विपरीत प्रतीत होने वाले कालदास और वल्लोम वास्तव में एक जैसे ही हैं।

कालदास और वल्लोम, दोनों ही कवित्तियों का सृजन करते हैं, और मल्लिका से प्रेम भी करते हैं। कति कालदास को मल्लिका का प्रेम सहज रूप से उपलब्ध होने की वजह से कविता के क्षेत्र में सफलता मिलती है और वल्लोम को इसके अभाव में असफलता। यदि मल्लिका का प्रेम वल्लोम को प्राप्त होता तो वल्लोम सफल कवि बनता। इस प्रकार यह कथन यह दर्शाता है कि नायकत्व और खलनायकत्व परस्थितियों की देन हैं, चरित्रों की मूलभूत प्रवृत्ति नहीं। इसी बात को राकेश ने प्रकारांतर से इस प्रकार कहा है- ‘योग्यता एक चौथाई व्यक्तिव का निर्माण करती है। शेष पूरतिप्रतिष्ठा द्वारा होती है।’

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/be-mains-ready-daily-answer-writing-practice-question/papers/2019/be-mains-ready-day-55-hindi-literature-2-vilom-kya-hai/print>